SANDIP UNIVERSITY
UGC Recognised

किसान मेला 2024

दिनांकः 19 मार्च 2024

"पोषक अनाजों के माध्यम से आजीविका और पोषण सुरक्षा में सुधार के लिए प्राकृतिक खेती"

आयोजक

श्री महावीर ठाकुर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेस सिजौल, मधुबनी

श्री महावीर ठाकुर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेस, सिजौल

किसान मेला-2024

दिनांकः 19 मार्च, 2024 (मंगलवार)

हमारे देश में कृषि अधिकांश आबादी की आजीविका का आधार है, कृषि के बिना कोई भी संस्कृति टिकाऊ नहीं है। लगभग 58 प्रतिशत भारत की आबादी को रोजगार प्रदान करने वाला सबसे बड़ा निजी पेशा कृषि है। 20% राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद का कृषि परिचालन से आता है। जबकि, कृषि को अपनी उत्पादकता और लाभप्रदता से संबंधित कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। बढ़ती जनसंख्या और उसकी उत्पादकता तथा भोजन की आवश्यकता से जुड़ी चुनौतियाँ, प्राकृतिक संसाधन आधार को लगातार कम कर रही हैं, जो जलवायु परिवर्तन के कारण और भी बढ़ गया है। साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन और भी अधिक समस्या को बढाने में सहायक हो रहा है। वर्षा के अनिश्चतता के कारण लगातार सूखे तथा बाढ की स्थिति का सामना करना पड़ता है जोकि मिट्टी की उत्पादकता, पानी की उपयोगिता की कमीं का मूल कारण है। भारतीय कृषि में छोटी जोतदारों की प्रधानता है और इन चुनौतियों का सामना उन्हें सबसे अधिक करना पड़ता है। ये छोटे जोत वाले किसान बेहतर कृषि के लिए विकसित नवनीतम तकनीकियों में निवेश तथा उनको अपनाने में असक्षम है। टिकाऊ खेती की कृषि आय बढ़ाने हेतु आज आवश्कयता है कि हम कम लागत पर अधिक उत्पादन तथा प्राकृतिक संसाधनों का बेहतर उपयोग करें।

प्राकृतिक खेती एक रसायन मुक्त कृषि परस्तिथिकी आधारित विविध कृषि प्रणाली है जो की फसलों, पेड़ो तथा पशुओ को जैव विविधता के साथ एकीकृत करती है। हाल के वर्षों में प्राकृतिक खेती का उद्देश्य पारंपरिक स्वदेशी प्रथाओं को बढ़ावा देना है जो बाहरी रूप से खरीदे गए इनपुट को कम करता है। प्राकृतिक खेती एक लागत प्रभावी और पारिस्थितिक रूप से अनुकूल होने के कारण कृषि के सतत विकास में उत्प्रेरक का कार्य कर रहा है। जल और पारिस्थितिक-संरक्षण प्राकृतिक खेती का वो पहलु है जो की जल की उपलब्धता एवम प्रवंधन के साथ खेती से होने वाले कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करता है। यह भूमि क्षरण की रोकथाम, समुद्र के अम्लीयता तथा प्रदूषण में कमी लाकर मानव समुदाय में अच्छा स्वास्थ्य सुनिश्चित करने में मदद करता है। इस समय कृषक समुदाय इसलिए कृषि के आय में वृद्धि द्वारा बेहतर आजीविका प्रदान करने हेतु लचीली कृषि की अत्यंत आवश्यकता है। भारत में हरित क्रांति की शुरूआत 1960 के दशक में भूख और गरीबी को कम करने के लिए की गई थी। हरित क्रांति के बाद, गेहूं और चावल का उत्पादन दोगुना हो गया लेकिन अन्य खाद्य फसलों जैसे देशी चावल की किस्मों और बाजरा के उत्पादन में गिरावट आई। जिससे खेती में देसी फसलों को नुकसान हुआ और विलुप्त होने का भी कारन बनीं।

हरित क्रांति के बाद एकल-फसल प्रणाली पर जोर देने से अनाज आधारित उत्पाद नियमित भारतीय आहार पर हावी हो गया और परम्परिक खाद्य पदार्थ समय के साथ कम हो गए। देशी चावल की किस्में और बाजरा सूखे, लवणता और बाढ़ प्रतिरोधी होते हैं। बाजरा अन्य अनाजों की तुलना में कम अवधि की होती हैं। अन्य अनाजों की तुलना में इसकी खेती में पानी की खपत बहुत कम होती है।पोषक अनाजों में मौजूद पॉलीफेनोल्स एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है और रोग प्रतिरक्षा को बढ़ाता है। साल 2023 को "अंतर्राष्ट्रीय पोषक-अनाज वर्ष" के रूप में मनाया जा रहा है।

इन्हीं को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष श्री महावीर ठाकुर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेस "पोषक अनाजों के माध्यम से आजीविका और पोषण सुरक्षा में सुधार के लिए प्राकृतिक खेती" विषय पर किसान मेले का आयोजन करने जा रहा है।

किसान मेले के उद्देश्य इस प्रकार हैं:-

- प्राकृतिक संसाधनों के पुनर्योजी उपयोग के माध्यम से पारिस्थितिकी तंत्र का पुनरुद्धार।
- सामाजिक रूप से न्यायसंगत और टिकाऊ कृषि उत्पादन प्रणाली को बढ़ावा देना।
- पर्यावरण-अनुकूल कृषि पद्धतियों के व्यापक ज्ञान और कौशल का प्रदर्शन।
- प्रकृति आधारित खेती के अंतर्गत नवाचार के माध्यम से ज्ञान आधारित उद्यमिता का विकास।
- उपभोक्ताओं के बीच बाजरा की पोषण सुरक्षा के लिए पोषक अनाज की खेती को लोकप्रिय बनाना।
- प्राकृतिक खेती में बागवानी फसलों के लिए उत्पादन तकनीक का मानकीकरण।

आमंत्रण

कृषि एवं कृषि के विभिन्न आयामों से सम्बन्धित व्यक्तियों, संस्थानों, कृषक संगठनों, उत्पादकों एवं विपणन संघो को इस किसान मेले में स्टाल प्रदर्शन, निरूपण एवं सहभागिता हेतु संदीप विश्विद्यालय परिवार आप सभी को सादर आमंत्रित करता है।

प्रदर्शकों के लिए उपलब्ध सुविधाएं :

- स्टॉल में बिजली की आपूर्ति के साथ 2 टेबल, 2 कुर्सियाँ होंगी।
- ऊपर वर्णित सुविधाओं एवं दरों में परिवर्तन, छूट एवं रियायत का सर्वाधिकार विश्वविद्यालय मेला प्रशासन के पास सुरक्षित रहेगा।

स्टॉल

इस मेले में प्रदर्शनी हेतु विश्वविद्यालय द्वारा निम्न प्रकार के स्टाल उपलब्ध कराये जायेंगे:

- तीन तरफ से घिरे आच्छादित स्टॉल
- 4 (मीटर) X 4 (मीटर) (16 वर्गमीटर) दर निःशुल्क है।

कार्यक्रम

19 मार्च, 2024 (मंगलवार)

पंजीकरण, उद्घघाटन एवं प्रदर्शनी , गोष्ठी, सेमिनार प्रक्षेत्र-भ्रमण मूल्यांकन एवं समापन समारोह

संपर्क सूत्र

डॉ. आकाश बाबू
मोबाइल नंबर- 9759948526
ईमेल-akash.baboo@sandipuniversity.edu.in

सोनू कुमार
मोबाइल नंबर-9155915744
ईमेल-sonu.kumar@sandipuniversity.edu.in

स्वस्थ जीवन के लिए स्वस्थ मृदा

SANDIP UNIVERSITY
UGC Recognised

आयोजक

श्री महावीर ठाकुर स्कूल ऑफ एग्रीकल्चर साइंसेस, सिजौल, मधुबनी

SANDIP UNIVERSITY
UGC Recognised

KISAN MELA 2024

Date: 19th March, 2024

"Natural Farming for Improving Livelihood and Nutritional Security through Cultivation of Nutri-cereal"

ORGANISER

Shri Mahavir Thakur School Of Agriculture Sciences

Shree Mahavir Thakur School Of Agriculture Sciences

Kisan Mela-2024

Date: 19th March, 2024

Majority of the population is depending on agriculture to support livelihood, no culture is sustainable without agriculture. This is the only largest private profession providing employment to about 58 % of population of India. Agricultural operation has contributed about 20% of the National GDP. However, agriculture is facing several challenges related to its productivity and profitability. The increasing human population and their requirement for food continuously depleting the natural resource base which further aggravated by climate change. The flexibility in monsoon, rainfall causes frequent drought and flood and indiscriminate use of inorganic fertilizers are the root cause for deterioration of the soil health, low nutrient and water use efficiency. The vulnerability of these stakeholders due to climate change is very high and they are less capable to invest to purchase the input required for adoption of recent technologies developed for better agriculture. The biosphere is fragile due to the ethical and sustainability trade-offs. Therefore, there is a need for increased production at lower costs, and better use of energy and natural resources for achieving sustainable developmental goals and augmenting farm income.

Natural Farming (NF) is a chemical-free agro-ecology based diversified farming system that integrates crops trees and livestock with functional biodiversity. Farmers across the globe are already practicing the regenerative agriculture in a form of either organic farming or natural farming. NF being a cost-effective and ecologically compatible alternative would be a catalyst in achieving the Sustainable Development Goals. The NF would ensure food security and zero hunger through better yield, diversity in cropping and access to nutritional sources and income-generating crops throughout the year. NF would ensure good health in the community through prevention of land degradation, reduction of ocean acidification and marine pollution from land-based activities. So, resilient agriculture is the utmost need in this hour to sustain the farming with increase in farm income and to support the farming community for providing decent livelihood.

The Green Revolution in India was initiated in the 1960s in order to alleviate hunger and poverty. This led to the loss of distinct indigenous crops from cultivation and also caused extinction. The traditional foods and cereal-based products that once occupied a part of the regular Indian diet are lost in time due to the emphasis on mono-cropping post-Green Revolution. The indigenous varieties of rice and millets are resistant to drought, salinity, and floods. The growing season of millets is short and the consumption of water for its cultivation is very less when compared to other cereals. The polyphenols present in millets acts as antioxidant and boost immunity.

Year 2023 is celebrating as "International year of Millets".

Keeping these in mind this year the University is going to organize the Kisan Mela on the theme of "Natural Farming for Improving Livelihood and Nutritional Security through Cultivation of Nutri-cereal".

The objective of Kisan Mela are as follows:-

- ☑ Revival of ecosystem through regenerative use of natural resources.
- ☑ Fostering a socially equitable and sustainable agricultural production system.
- ☑ Showcasing comprehensive knowledge and skills of eco-friendly agricultural practices.
- ☑ Development of knowledge base entrepreneurship through innovation under nature-based farming.
- ☑ Popularization of nutri-cereals cultivation for nutritional security
- ☑ Spread the importance and nutritional benefits of millets among consumers
- ☑ Standardization of production technology for horticultural crops in natural farming.
- ☑ Technology outreach and agri-trade for convergence of farm with institute, industries and policy makers.

Invitation

Individuals & organizations related to Agriculture and allied vocations, farmers, institutions, government & non government organization, producers & marketing federations are cordially invited to participate, attend and cooperate in exhibition of Kisan Mela-2024

Facilities Available In The Stall For Exhibitors

- ☑ There shall be 2 tables, 2 chairs with supply of electricity points in the stall.
- ☑ The university has full right to change, make concession and relief of the rates quoted for stalls.

Stall

The following type of stall will be provided by university during mela:

- ☑ Three side covered stall
- ☑ 4 meter X 4 meter =16 square meter is free

Programme

19 March, 2024 (Tuesday)

Registration, Inauguration, Exhibition, Gosthi, Seminar, Evaluation and Valedictory programme

Contact details

Dr. Akash Babu
Mobile no.- 9759948526
Email: akash.baboo@sandipuniversity.edu.in

Sonu Kumar
Mobile No.-9155915744
Email: sonu.kumar@sandipuniversity.edu.in

Healthy Soil for Healthy Life

SANDIP UNIVERSITY
UGC Recognised

ORGANISER

Shri Mahavir Thakur School Of Agriculture Sciences, Sijoul, Madhubani